पाठ - 11 **मार्च 10-16**

आभार: प्रतिदिन का संकल्प

सब्त अपराह्न **मार्च 10**

इस सप्ताह के अध्ययन के लिये पढ़ें : भजन० 3:21, मत्ती 4:3-10, मत्ती 6:33, व्या०वि० 28:12, नीति व० 13:11, नीति व० 21:5, 2कुरि० 4:18.

याद वचन: *"इसलिये हर एक का हक्क चुकाया करो, जिसे कर चाहिए, उसे कर दो; जिसे महसूल चाहिए, उसे महसूल दो; जिससे डरना चाहिए, उससे डरो; जिसका आदर करना चाहिए उसका आदर करो। आपस के प्रेम को छोड़ और किसी बात में किसी के कर्जदार न हो; क्योंकि जो दूसरे से प्रेम रखता है, उसी ने व्यवस्था पूरी की है" (रोमियों 13: 7-8)।*

कभी-कभी आप किसी को पाकर खुशकिस्मत हो सकते हैं जो आप को पैसे उधार देने की इच्छा कर रहा है। हो सकता है वह व्यक्ति इसे शुद्ध उद्देश्य के साथ करता है - यह कि वह आपको आर्थिक दबाव से निकलने में मदद की इच्छा करता है। लेकिन अधिकतर मामलों में लोग अपने हृदय की भलाई के तहत आप को पैसे उधार नहीं देते हैं। वे आप को पैसे इसलिये देते हैं कि वापसी में आपसे अधिक पैसे कमाना चाहते हैं।

ऋण से बचने के लिये हमें हर संभव प्रयासरत होना चाहिए। निस्संदेह, खास परिस्थितियों में, जैसे घर या कार खरीदने में, एक चर्च बनाने में, या शिक्षा प्राप्त करने में, हमें पैसे उधार लेने की आवश्यकता होती है। परन्तु इसे जितना संभव हो बुद्धिमानी पूर्वक करना चाहिए, इस इरादे के साथ कि जितना जल्द संभव हो इस ऋण से छुटकारा पायें।

तौभी हमें सतर्क होने की जरूरत है। हमें पैसे बर्बाद नहीं करना है यह परमेश्वर के लोगों के लिये प्रवेश द्वार है "सांसारिक खजानों के प्रेम और लालच को उनके चरित्र को शासन करने वाली विशेषताएँ बनाइये। जब तक ये विशेषताएँ शासन करती हैं, उद्धार और अनुग्रह पीछे खड़े हो जाते हैं।" - Ellen G. White, Early writings, p. 267.

हमें हमारे हुनर और योग्यताओं में सुधार करना है ताकि हम अनुशासित रहें और वह सब करें कि हम ऋण से बच सकें। इस सप्ताह हम ऋण के संबंध में बाईबल क्या कहती है उस पर निगाह डालेंगे।

- सब्त मार्च 17 की तैयारी के लिये इस सप्ताह के पाठ का अध्ययन करें।

उधार मांगना और खर्च करना

भविष्यद्वक्तागण और एलिशा जरदन नदी के किनारे से लकड़ियाँ प्राप्त करते थे जब "एक जन बल्ली काट रहा था, तो कुल्हाड़ी बेंट से निकलकर जल में गिर गई; इसलिये वह चिल्लाकर कहने लगा, हाय! मेरे प्रभु, वह तो माँगी हुई थी" (2राजा 6:5)। क्रिया "उधार मांगना" का अर्थ है अनुमति लेकर किसी चीज को प्रयोग में लाना जो दूसरे की है। यह अनुमति जोखिम और जिम्मेदारी का निर्वाह करती है। उधार लिया हुआ पैसा उधार लिये हुए कुल्हाड़ी से भिन्न नहीं है, सिवाय इसके कि यदि दुरुपयोग किया गया तो परिणाम बहुत गम्भीर हो सकते हैं।

पैसे उधार लेने का एक ही कारण है इसे खर्च-करना। आर्थिक जोखिम जो हम लेते हैं वह साहस में है कि हममें इसे चुकता करने की क्षमता है और यह कि भविष्य में कोई आर्थिक अचम्भा नहीं रहेंगे। तथापि भविष्य हमारे लिये अनजान है (सभोपदेशक 8:7), इसलिये पैसे उधार लेना हमेशा एक जोखिम को आवश्यक बना देता है।

ऋण के विषय में अग्रांकित पदस्थलों को क्या कहना चाहिए?

भजन० 37:21 _____

_____

सभोप० 5:5 _____

_____

व्य०वि० 28:44-45 _____

_____

हम पैसे इस विचार के साथ उधार लेते हैं कि इसे बुद्धिमानी से प्रयोग में लायेंगे, परन्तु जो हमारे पास है उसे खर्च करने की परीक्षा, यहाँ तक कि उधार में लिया हुआ पैसा, कुछ बहुत मुश्किल समस्याओं की ओर ले जा सकती है। सचमुच, उधार लिये हुए पैसे को खर्च करना हम में से बहुतों को वैसा जीवन जीने की अनुमति देता है जो हम कर नहीं सकते। उधार लेने और खर्च करने की परीक्षा एक उपभोक्ता संस्कृति की धड़कन है जो अमीर और गरीब को प्रभावित करती है। जब परीक्षित हुए, हमें परमेश्वर की व्यवस्था (जुगाड़) को ढूंढ़ना चाहिए (1कुरि० 10:13), क्योंकि उधार लेना एक अभिशाप हो सकता है (व्य०वि० 28:43-45)।

पैसे उधार लेने की बुरी आदत की शुरुआत न करें। यदि आपके पास पहले से है, जितनी जल्दी हो सके इसे चुकता कर दें। हमें बुद्धिमानीपूर्वक

खर्च करना सीखना आवश्यक है और परमेश्वर के पैसे के मालिक होना है और न कि संसार के पैसे द्वारा मालिक बनें।

पुनः, कुछ परिस्थितियाँ हैं जिसमें हमें उधार लेने की जरूरत होती है। परन्तु इसे सतर्कतापूर्वक किया जाना चाहिए और इस इरादे के साथ कि जितनी जल्दी हो सके हम सब कुछ चुकता कर दें।

उस व्यक्ति के लिये कौन-से आत्मिक खतरे हैं जो ऋण में डूब जाता है?

सोमवार **मार्च 12**

भण्डारीपन और क्षणिक आनंद

"इस पर याकूब ने एसाव को रोटी और पकाई हुई मसूर की दाल दी; और उसने खाया-पिया, और उठकर चला गया। यों एसाव ने अपना पहिलौठे का अधिकार तुच्छ जाना" (उत्प० 25:34)। एसाव एक असभ्य खुले मैदान का व्यक्ति था जो अपने मनोभावों का पीछा करता था। जब उसने अपने भाई के पकाए भोजन की सुगंध ली वह तुरंत मसूर दाल चाहने लगा, यद्यपि यह अविश्वसनीय था कि वह भूख से मर रहा था। उसकी भावनाओं और अनुभूतियों द्वारा नियंत्रित होकर, उसने उस क्षण के दबाव को अनुमति दी कि तर्क को वश में कर सके और उसने अपने पहिलौठे के अधिकार को कुछ क्षणिक संतुष्टि के लिये बेच दिया। जब उसने अपने पहिलौठे के अधिकार को वापस चाहा "आँसू बहा-बहाकर खोजने पर भी" (इब्रा० 12:17), वह उसे पा न सका।

इसके विपरीत, हमारे पास यीशु का उदाहरण है। चालीस दिन के उपवास और लगभग भुखमरी के बाद, यीशु शैतान द्वारा तीन बार परीक्षित हुआ (मत्ती 4:3-10)। परन्तु यीशु ने परीक्षाओं को देखा कि वे किस प्रयोजन के लिये थे, और अपनी कमजोर दशा में भी वह संतुष्टि के आगे नहीं झुका। यीशु अपना सम्पूर्ण जीवन पाप और संतुष्टि को इनकार करते जीया, और ऐसा करने के द्वारा उसने दिखा दिया कि पाप के ऊपर हमारी विजय हो सकती है। उसने अपने पहिलौठे के अधिकार को नहीं बेचा या खोया, और वह सभों को उसके साथ सह उत्तराधिकारी होने को आमंत्रित करता है (रोमि० 8:17, तीतुस 3:7)। यीशु के उदाहरण का, जब वह परीक्षित हुआ, पीछा करने के द्वारा हम हमारे पहिलौठे अधिकार को कायम कर सकते हैं (1कुरि० 10:13)।

सर्वोत्तम चीज जो यह संसार प्रदान करता है वह है यहाँ और अभी का अनुभव, क्योंकि यह यहाँ के बाद का अनुभव प्रदान नहीं कर सकता। स्वयं के लिये जीना परमेश्वर के लिये जीने के विपरीत है।

क्षणिक संतुष्टि के संभावित खतरों के विषय निम्नलिखित पदस्थल क्या सिखलाते हैं, यहाँ तक कि विश्वस्त लोगों के लिये? 2शमू० 11:2-4, उत्प० 3:6, फिलि० 3:19, 1यूहन्ना 2:16, रोमि० 8:8.

_____

_____

क्षणिक संतुष्टि की चाह एक अनियंत्रित दिमाग का संकेत है; यह धैर्य का एक शत्रु है जो लम्बे अंतराल के लक्ष्यों को खोखला करता है, जिम्मेदारी का ठट्ठा करता और घायल करता है। संतुष्टि को देर करना ज्ञानी सिद्धान्त है; यह एक जीवन कौशल है जो हमें परिस्थितियों और दबावों को व्यवस्थित करने में मदद करता है, खासकर परीक्षाओं में जो संसार को देना है, जैसे अविवेकपूर्ण ढंग से पैसे उधार लेना। यह विचार हालांकि क्षणिक पुरस्कार की विलासिता पर निर्मित एक संसार में लोकप्रिय नहीं है जहाँ पर शीघ्र निर्धारण, और शीघ्र अमीर बनने की योजनाएँ चलती हैं। एक बार हमने जब क्षणिक संतुष्टि का अनुभव कर लिया है हम संभवत: अल्पावधि पुरस्कार को पुन: चुनते हैं, और तब फिर, और फिर . . . उपहारों के भण्डारी जो परमेश्वर ने हमें दिये हैं उस फंदे में नहीं गिरना चाहिए।

मंगलवार **मार्च 13**

आपके साधनों की सीमा के अन्दर रहना

"बुद्धिमान के घर में उत्तम धन और तेल पाए जाते हैं, परन्तु मूर्ख उनको उड़ा डालता है" (नीति० 21:20)। यह पदस्थल आर्थिक जिम्मेदारी के भण्डारीपन को विलासितापूर्ण और अनावश्यक प्रबंधन के साथ फर्क करता है। मूर्ख लोग अपने साधनों की सीमा के अंदर जीने की योजना नहीं बनाते हैं। वे लालच स्वरूप अपनी जायदाद को उड़ा देते हैं, यहाँ तक कि उधार लिया हुआ धन को भी, यह सोचते हुए कि आर्थिक बुद्धिमानी या मितव्ययी जीवन एक कष्ट है, जैसा एक अनिच्छित आहार। तथापि जब भी हमें पैसे उधार लेने की जरूरत होती है, जैसे कि एक घर के लिये, हमें इसे सतर्कतापूर्वक सोचने और समझने के बाद ही करना चाहिए कि हम अपने साधनों की सीमा के अन्दर जी सकें।

अमीर अपने धन के कारण साधनों की सीमा के अन्दर जी सकता है। उनकी समस्या है कि वे हमेशा अपनी संपत्ति के विषय चिंतित रहते हैं कि इसे कैसे रखा जाये। जब लोगों के पास बहुत काम रहता है और नियमित मजदूरी पर जीते हैं वे जीवित रहने के लिये चिंतित रहते हैं, धन के लिये नहीं। अभी भी बाईबल हमारे साधनों की सीमा के अन्दर जीने की सलाह देती है इससे बेपरवाह कि हमारे पास कितना है। पौलुस सलाह देता है कि हम किसे अत्यन्त सादगी मानें: "और यदि हमारे पास खाने और पहिनने को हो, तो इन्हीं पर सन्तोष करना चाहिए" (1तीमु० 6:8)। पौलुस सांसारिक धन को उतना मोल नहीं देता है क्योंकि उसके लिये मसीह में जीना काफी है (फिलि० 1:21)।

किसी चीज से पहले किस सिद्धांत को याद किया जाना चाहिए? मत्ती 6:33. हम कैसे आश्वस्त हो सकते हैं कि यह है जिस प्रकार हम हमारी जिन्दगी जी रहे हैं?

_____

_____

हमें हमारे साधनों को आमदनी की तरह नहीं वरन स्रोत के रूप में सोचना चाहिए कि हमें इसे व्यवस्थित करने की जिम्मेदारी है। बजट एक तरीका है हमें इस कार्य की प्राप्ति हेतु प्रयोग करना चाहिए। बजट की योजना बनाना एक बुद्धिमत्तापूर्ण दक्षता है जिसे विचारपूर्वक अध्ययन करने की जरूरत है। अनुशासित अभ्यास और प्रयास एक संतुलित आर्थिक योजना के सफल प्रबंधन के लिये आवश्यक है नीति० 14:15)। यदि हम हमारे आर्थिक भण्डारीपन की योजना को सफल करने के लिये संकल्प लेते हैं तो हम लज्जाजनक आर्थिक गलतियों से बचने में कामयाब हो सकेंगे।

यदि आपके साथ पैसे के प्रबंधन की समस्या है तो एक बजट बनाईये। यह जटिल नहीं होना चाहिए। यह इतना साधारण हो सकता है जैसे कुछ महीने के आपके खर्च का जोड़ और आपके मासिक खर्च का औसत। मूल चीज यह कि आपको अपने साधनों के अंदर जीना है, कोई बात नहीं, आप को ऋण से बचने के लिये हर संभव चीज करनी है।

पढ़ें लूका 14:27-30, यीशु एक बनाने वाले के उदाहरण देने के द्वारा चेलेपन की कीमत को यहाँ पर स्पष्ट करता है इसमें एक मीनार के बनने की कीमत का आकलन है और क्या होता है जब वह इसे पूरा नहीं कर पाता है। इससे हम भण्डारीपन के लिये कौन-सा सबक ले सकते हैं?

बुधवार **मार्च 14**

ऋण को न कहना

पढ़ें व्य० वि० 28:12, बहुत अधिक कर्ज में डूबने के विषय यह हमें क्या सिखलाता है? कौन-से सिद्धान्त को हम यहाँ काम पर देखते हैं?

यह सामान्य ज्ञान है किसी तरह से आप ऋण से बचें। पवित्रशास्त्र दूसरे लोगों के ऋण के लिये हमें जिम्मेदार बनने से भी हतोत्साहित करता है (नीति० 17:18, 22:26)। ऋण भविष्य को प्रभावित करता है और हमें हमारी आर्थिक कमजोरी की दशा से इसके मांग पर समर्पित होने को बाध्य करता है। यह एक अमृत सामान है जिसे मसीही लोग मना करने और व्यवस्थित करने में कठिनाई पाते हैं। ऋण को अनैतिक नहीं होना चाहिए, परन्तु यह हमारे आत्मिक जीवन को मजबूती नहीं देता है।

"अर्थव्यवस्था पर सख्त हिदायत होनी चाहिये अन्यथा भारी कर्ज का नुकसान उठाना पड़ेगा। सीमाओं के अंदर रहिए। कर्ज के नुकसान से दूर रहिये जिस प्रकार कोढ़ से दूर रहना चाहेंगे।"– एलेन जी०ह्वाईट, कौन्सिल्स ऑन स्टीवार्डशिप, पेज 272.

ऋण आर्थिक गुलामी बन सकता है जो हमें "ऋण दाता का दास" बनाता है (नीति० 22:7)। क्योंकि ऋण हमारे आर्थिक संसार की संरचना से इस कदर लपेटा हुआ है कि हम इसे सामान्य स्तर का सोच लेते हैं। आखिरकार सारा संसार ऋण पर अस्तित्व है; क्योंकर लोग व्यक्तिगत रूप से वही चीज न करें? ऐसी प्रवृति का होना गलत है।

"परमेश्वर के साथ पवित्र वाचा स्थापित करें ताकि उसकी आशिष के द्वारा आप अपने कर्ज अदा कर सकें और तब किसी चीज के लिये किसी व्यक्ति का एहसानमंद न हों यदि आप दलिया और रोटी पर जीवित हैं। 25 सिक्के अतिरिक्त के लिये आपकी जेब से खर्च करने की बजाय आपकी मेज को तैयार करना सहज है। सिक्कों की देखभाल करें और रुपये स्वयं की देखभाल कर लेंगे। यहाँ थोड़ा-सा, वहाँ थोड़ा, वह इसके लिये, उसके लिये एवं अन्य के लिये खर्च किया जाता है और यह बहुत जल्द बड़ी मुद्रा में तब्दील हो जाता है। स्वयं से इनकार करें, कम से कम तब जब आप ऋणों से घिरे हुए हैं . . .हिम्मत न हारें, निरूत्साहित न हों या पीछे मुड़ें। अपने स्वाद का इनकार करें, इच्छा की विलासिता का इनकार

करें, पैसे को बचाएँ और अपने ऋण को चुकाएँ। उन्हें जितना जल्द संभव हो कार्यान्वित करें। जब आप स्वतंत्र पुरुष के रूप में पुनः खड़े हो सकते हैं, किसी चीज के लिये किसी का एहसानमन्द न बनें, आप बड़ी जीत को हासिल कर चुके होंगे।"–एलेन जी० ह्वाईट, कौन्सिल्स ऑन स्टीवार्डशिप, पेज 257.

ऋण मसीहियों के खड़े होने की कमजोर नींव है। यह हमारे आत्मिक तजुर्बे को नुकसान पहुँचा सकता है और परमेश्वर के काम में धन देने की हमारी योग्यता को प्रभावित कर सकता है। दूसरों को आत्मविश्वास के साथ देने की हमारी योग्यता को हमसे छीन सकता है और परमेश्वर की आशीषों के लिये सुअवसरों को चुरा लेता है।

इस समय कौन-से चुनाव हैं जो आप कर सकते हैं जो आपको किसी अनावश्यक ऋण से बचने में मदद कर सकता है? स्वयं से इनकार करने के लिये आपको किस चीज की जरूरत हो सकती है ताकि ऋण से दूर रहे?

बृहस्पतिवार **मार्च 15**

बचत और निवेश

चींटियाँ शीतकाल के लिये खाद्य सामग्री बचाने हेतु परिश्रम करती हैं (नीति० 6:6-8)। उनके तरीकों पर विचार करने के लिये हम समझदार हैं जब हम नियमतः एक खास उद्देश्य के लिये पैसे बचाते हैं। बचत में तर्क यह है, हमारे जीवन यापन के खर्चों के लिये स्रोतों को उपलब्ध रखना अथवा बर्बादी की बजाय जरूरतें अथवा जमाखोरी जो हम कमाते हैं। पैसे का प्रबंधन ज्ञान, बजट, और अनुशासन की मांग करता है। यदि जो भी हम करते हैं हमारे स्वयं के लिये बचत होता है, हम परमेश्वर की सम्पत्तियों के भण्डारी होने की बजाय उसे चुराते हैं।

"रुपये जो अनावश्यक रूप से खर्च होते हैं दोहरा घाटा है। यह केवल बर्बाद ही नहीं होता, परन्तु कमाई के लिये संभावना भी खत्म हो जाती है। यदि हमने इसे अलग किया होता, यह पृथ्वी पर वृद्धि कर रहा होता बचत के द्वारा या स्वर्ग में देने के द्वारा . . . बचत एक अनुशासन है जो रुपये पर अधिकार विकसित करता है। रुपये को हमें अगुवाई करने की बजाय, जहाँ हमारी उमंग प्रेरित करती है, हम नियंत्रित करते हैं।"– Randy C. Alcorn, Money Possessions and Eternily, page 328.

पढ़ें नीति० 13:11, 21:5, 13:18। हमारे लिये यहाँ पर कौन से व्यावहारिक शब्द हैं जो हमें आर्थिक विषयों के साथ बेहतर बर्ताव में मदद कर सकते हैं?

_____

_____

भण्डारी पारिवारिक जरूरतों के लिये बचत करते हैं और परमेश्वर के धन को व्यवस्थित करते हुए स्वर्ग में निवेश करते हैं। यह उस विषय में नहीं कि किसी के पास कितना है, परन्तु बाईबलीय प्रबंधन योजना के होने के विषय में है। आपकी आर्थिक दशा कुछ भी हो सकती है। परिवार के लिये जरूरतों की बचत करना बुद्धिमानी पूर्वक होनी चाहिए। किसी घाटे को कम करना, जोखिम को अलग करता है (सभोप० 11:1-2)। आपकी जरूरतों के पूर्व ऐसी अल्पीकरण पर कार्य करना (नीति० 24:27) और तब दूसरों से योग्य सलाह चाहना (नीति० 15:22) इस नमूने में दो सफल औजार हैं। जैसे जरूरतों की पूर्ति होती है और धन की बढ़ोतरी होती है, हमें "परमेश्वर यहोवा को स्मरण रखना चाहिए, क्योंकि वही है जो तुझे सम्पत्ति प्राप्त करने का सामर्थ्य देता है" (व्य०वि० 8:18)।

परमेश्वर के भण्डारी के लिये बहुत ही सुरक्षित निवेश नमूना है "स्वर्ग के राज्य" में निवेश करना (मत्ती 13:44)। वहाँ पर कोई मन्दी, जोखिम,चोर, या व्यापार घाटा नहीं है। यह एक पर्स या बटुआ होने के समान है जो कभी खत्म नहीं होगा (लूका 12:33)। मसीह को ग्रहण करना खाता खोल देता है, और दशमांश वापस करना एवं दान देना जमा करना है। अर्थात् जितना अधिक हमें हमारी सांसारिक एवं पार्थिव चीजों की यहाँ पर देखभाल की जरूरत होती है, जैसे बिलों का भुगतान, हमें अभी भी हमेशा हमारे ध्यान को अनन्त सच्चाईयों पर केंद्रित करने की आवश्यकता है।

पढ़ें 2कुरि० 4:18. हम इस सच्चाई को हमेशा हमारे सामने कैसे रख सकते हैं जब कि इसी समय यहाँ पर जिम्मेदार भण्डारियों की तरह रह रहे हैं?

शुक्रवार **मार्च 16**

अतिरिक्त विचार : हरेक स्वाभाविक योग्यता, दक्षता, या वरदान परमेश्वर की ओर से आता है, चाहे हम आनुवांशिक रूप से इसके साथ

जन्में हों, हमारे वातावरण के द्वारा शिक्षित और प्रभावित या दोनों हुए हों। समीकरण का महत्त्वपूर्ण हिस्सा वह है जो हम हमारी योग्यताओं और दक्षताओं से करते हैं। परमेश्वर भण्डारियों को शिक्षा और व्यावहारिक अनुभव के द्वारा अपनी दक्षताओं और योग्यताओं में प्रवीण होने सीखने की अपेक्षा करता है (सभोप० 10:10)। बसलेल को "परमेश्वर की आत्मा से ऐसा परिपूर्ण किया है कि सब प्रकार की बनावट के लिये उसको ऐसी बुद्धि, समझ, और ज्ञान मिला है" (निर्ग० 35:31)। वह और ओहोलीआब (निर्ग० 35:34) के पास दूसरों को सिखाने के लिये उनकी कुशलता थी।

हम बेहतर भण्डारी होना सीख सकते हैं और खास कर कर्ज को खत्म करने के लिये जब हम भौतिक जगत में वास करते हैं। हमें पढ़ाई, सेमिनार, औपचारिक शिक्षा (जब भी संभव हो), और आखिरकार हमने जो सीखा है अभ्यास करने के द्वारा हमेशा हमारी दक्षताओं को विकसित करना चाहिए। हमारी दक्षताओं में वृद्धि करना हमें परमेश्वर को हमारा सर्वोतम देने में और अच्छे भण्डारी होने में सक्षम बनाता है।

तोड़ों का दृष्टान्त संकेत देता है कि प्रत्येक दास "अपनी योग्यता के अनुसार" तोड़े पाता है (मत्ती 25:15)। दो दासों ने अपने तोड़ों को दो गुणी किया; तीसरे ने अपनी भूमि के अन्दर छिपा दिया। हमें हमेशा जो हमारे पास है सुधार करने के लिये प्रयास करना चाहिए, परन्तु तोड़े गाड़ना किसी योग्यता या दक्षता को नहीं दर्शाता था। रुपये का प्रबंध, कर्ज से बाहर निकलना, अनुशासन को विकसित करना, एवं व्यावहारिक अनुभव योग्यताएँ विकसित करता है जो परमेश्वर के द्वारा आशीषित हैं। किसी चीज में अच्छा और सफल होने के लिये हमें इसे बार-बार दोहराना चाहिए।

"जिस प्रकार बाईबल के पाठ दैनिक जीवन में लाये गये हैं, उनका चरित्र पर गहरा और टिकाऊ असर है। इन पाठों को तीमुथियुस ने सीखा और अभ्यास किया। उसके कोई खास उत्कृष्ट तोड़े नहीं थे, परन्तु उसका काम मूल्यवान था क्योंकि उसने अपनी ईश्वर-प्रदत्त योग्यताओं को प्रभु की सेवा में लगाया।"– एलेन जी० ह्वाईट, द एक्ट्स ऑफ द अपोसल्स, पेज 205.

विचार-विमर्श के लिये प्रश्न :

1. यद्यपि आत्म-नियंत्रण मसीहियों के लिये हमेशा महत्त्वपूर्ण है, यह खास तौर से महत्त्वपूर्ण है जब आत्म-नियंत्रण की कमी आर्थिक कठिनाई की ओर अगुवाई कर सकती है अथवा बर्बादीकी ओर भी ले जा सकती है। एक कलीसिया के तौर पर उन्हें मदद करने के लिये हम क्या कर सकते हैं जो इस समस्या के खतरे में हो सकते हैं?

2. पढ़ें रोमियों 13:7-8, हमारे प्रति दिन की जिन्दगियों में इन शब्दों को और दूसरों के साथ हमारी सभी पारस्परिक क्रियाओं को हम कैसे लागू कर सकते हैं?

3. कुछ लोग तर्क पेश करते हैं कि हमें कर्ज में होने के विषय में चिंतित नहीं होना चाहिए, क्योंकि यीशु जल्द वापस आ रहा है। उस दावे को आप कैसे प्रत्युत्तर देंगे?